६८ **कथामृत** ११

मैथिली मे पत्रिका प्रकाशनक आरम्भ
१९०५ सँ भेल। एहि समय सँ भेल आइ धरि भारतक
अनेक क्षेत्र सँ कोनो ने कोनो मैथिली पत्रिकाक प्रकाशन बराबरि
होइत रहल अछि। जहिना साहित्य समाजक दर्पण
मानल जाइत अछि तहिना पत्र-पत्रिका साहित्यक
दर्पण थीक। भारतवर्षक इतिहास मे युगपुरुष
कहाओल राजा राम मोहन राय क नाम बहुत
आदर सँ लेल जाइत अछि। जखन भारत सदियहु सँ
कुंठित दुर्बल आ प्रभावहीन भेल जा रहल छल
ताहि समय मे हिनक आविर्भाव भेलनि। समाज के
एक सूत्र मे बान्हबाक लेल राजा राम मोहन राय
पत्रिका प्रकाशनक काज प्रारंभ कयलनि आओर
एहि मे पूर्ण सफलता सेहो भेटलनि। तहिना
जखन मिथिला मे पत्रिका प्रकाशनक काज प्रारंभ
भेल ओहि समय मे मिथिलाक स्थिति बड्ड दु-
र्दयनीय छल। सामाजिक, व्यावहारिक, सांस्कृतिक
साहित्यक आदि सब क्षेत्र मे लोक पिछड़ल जा
रहल छल आ एहि कारणें मिथिलावासीक
जनता मे एकता अवरुद्ध भ रहल छल ताहि पर
संकट आबि गेल छैक। पत्रिकाक प्रकाशन मैथिली
हित साधन सँ प्रारंभ भेल आओर आइ धरि
कए मिथिलामोद, मिथिला मिहिर, मिथिला दर्शन आदि
पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन होइत आएल। एहि सब पत्रिका
मे देश-प्रेम, सामाजिकता, आर्थिक धार्मिक रचनादि
रचनाक प्रकाशन प्रारंभ भेल आओर एकर
आशातीत परिणाम सेहो भेटैत आएल। साहित्यक
अतिरिक्त [illegible] लेल पत्र-पत्रिका मे [illegible]
कथा, कविता, नाटक, कविता, संस्मरण, [illegible]
निबन्धक प्रकाशन सेहो होइत छल। एहि सब
पत्रिकाक माध्यम सँ समाज के। चन्द्रनाथ मिश्र,
'अमर' [illegible] मिश्र, सीताराम झा, हरिमोहन झा,
[illegible] 'संजीवन', चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' आदि
कतेको साहित्यकार भेटलनि। मिथिला मे [illegible]
[illegible] उपलब्ध रचना [illegible] वर्तमान अछि।

एहि आन्दोलन प्रभृति कें आगू बढ़ैबा मे, तथा कला एवं संस्कृति पक्ष मे पट विद्यालयक, विश्वविद्यालयक तथा परीक्षालयक सबहक प्रकाशन पत्र-पत्रिका मे होइत रहल अछि।

एहि क्रम मे 1981 ई० मे कलकत्ता मे एक एहन प्रभावशाली मासिकक प्रकाशन प्रारंभ भेल जे आगू चलि मैथिल संस्कृति एवं साहित्य परिदृश्य कें समृद्ध करबाक सफल प्रयास करैत रहल अछि। एहि पत्रिका छल श्री राजनंदन लाल दासक संपादन मे प्रकाशित मैथिली मासिक पत्रिका 'कर्णामृत'। एहि पत्रिका कर्णगोष्ठी, कलकत्ताक मुखपत्र पत्रिका रूप मे आबैत अछि। सुधांशु शेखर चौधरी, कुमर रघुनन्दन दास, आनन्द पाठक, बृजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म', श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' प्रभृति अनेक साहित्यकार लोकनि अपन प्राचीन एवं अर्वाचीन लेखनक माध्यम सँ मिथिलाक महान विभूति व इतिहास एवं व्यक्तित्व कें समाजक समक्ष आनबाक सफल प्रयास करलनि। कथा, उपन्यास आदि, कविता संस्मरण आदि माध्यम सँ ई पत्रिका मैथिली साहित्यक संवर्धन मे अपन विशेष योगदान दऽ रहल अछि। सम्प्रति एकर सताइस अंक प्रकाशित भेल अछि। आशा करैत छी जे एहि पत्रिका चलैत रहत तथा मैथिली समाज संस्कृति के अक्षुण्ण रखबाक संग-संग देशक विभिन्न समस्या आर ओकर समाधानक मार्ग सेहो प्रशस्त करैत मैथिली पत्रकारिताक विधि प्रतिनिधित्व आगू बढ़ि क करत।